समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 6

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

श्री अरविंद कुमार सिंह (1930-2021)

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



श्री अरविंद कुमार सिंह

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कवि परिचय

जन्म :- 17 जनवरी 1930

जन्म स्थानः मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

पेशाः पत्रकार, कला/नाट्य/फ़िल्म, समीक्षक कहानीकार, अनुवादक, शब्दकोशकार

प्रमुख कृतियाँ: समान्तर कोश (1996), द पेंग्विन इंग्लिश-हिन्दी/हिन्दी-इंग्लिश डिक्शनरी ऐंड थिसॉरस (2007)

निधन: 26 अप्रैल 2021 (आयु 91 वर्ष) नई दिल्ली ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कवि परिचय

जन्म :- 17 जनवरी 1930

जन्म स्थानः मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

पेशाः पत्रकार, कला/नाट्य/फ़िल्म, समीक्षक कहानीकार, अनुवादक, शब्दकोशकार

प्रमुख कृतियाँ: समान्तर कोश (1996), द पेंग्विन इंग्लिश-हिन्दी/हिन्दी-इंग्लिश डिक्शनरी ऐंड थिसॉरस (2007)

निधन: 26 अप्रैल 2021 (आयु 91 वर्ष) नई दिल्ली ।

विचारों और भावों के आदान-प्रदान मानव के लिए एक अपरिहार्य सामाजिक कार्य है। पहले यह कार्य मौखिक रूप से संपन्न होता था। कालान्तर में लिपि के विकास होने के पश्चात लिखित रूप में यह कार्य होने लगा। 'पत्र लेखन' इसी की एक कड़ी है। प्राचीन काल से ही संदेश के आदान-प्रदान के लिए पत्रों का व्यवहार राजकीय और पारिवारिक क्षेत्रों में होता रहा है।

अपरिहार्य : অত্যন্ত জৰুৰী

कालान्तर : সময়ৰ সৈতে

कड़ी : অংশ

संदेश वाहक के रूप में पत्र का पत्र-वाहक के रूप में कबूतर, हरकारा, डाकिया आदि का महत्व बढ़ने लगा। धीरे-धीरे पत्रों का ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व भी बढ़ा। परन्तु युग परिवर्तन के साथ-साथ तथा सूचना प्रौद्योगिकी के कारण पत्रों के आदान-प्रदान में कुछ कमी आयी। टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, ई-मेल, इंटरनेट आदि नए-नए माध्यमों के कारण पत्रों का व्यवहार कम होने लगा।

संदेश वाहक : বার্তা বাহক

हरकारा : ডাকোৱাল

सूचना प्रौद्योगिकी : তথ্য প্ৰযুক্তি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

परन्तु यह विचारणीय है कि जो अनुभूति और भाव पत्रों से जुड़े होते हैं, वे आधुनिक संचार माध्यमों में भी उसी प्रकार प्राप्त होते हैं या नहीं। गौर से देखने पर यह अनुभूत होता है कि पत्र में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो नए संचार माध्यमों में परिलक्षित नहीं होते। इस लिए पत्रों का महत्व अभी बरकरार है। प्रस्तुत लेख में लेखक श्री अरविंद कुमार सिंह ने इसी तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया है।

बरकरार : अटूट

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया



पत्रों की दुनिया भी अजीबो-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है।

अजीबो-गरीब : অসাধাৰণ
संतोष : সন্তুষ্টি
संचार : সংযোগ ব্যৱস্থা
एसएमएस : Short Message Service
(সংক্ষিপ্ত বার্তা ব্যৱস্থা)

पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नई घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है। पत्रों का भाव सब जगह एक-सा है, भले ही उसका नाम अलग-अलग हो।

सिलसिला : धारावाहिकता

जड़ : मूल

अनूठी : अद्वितीय

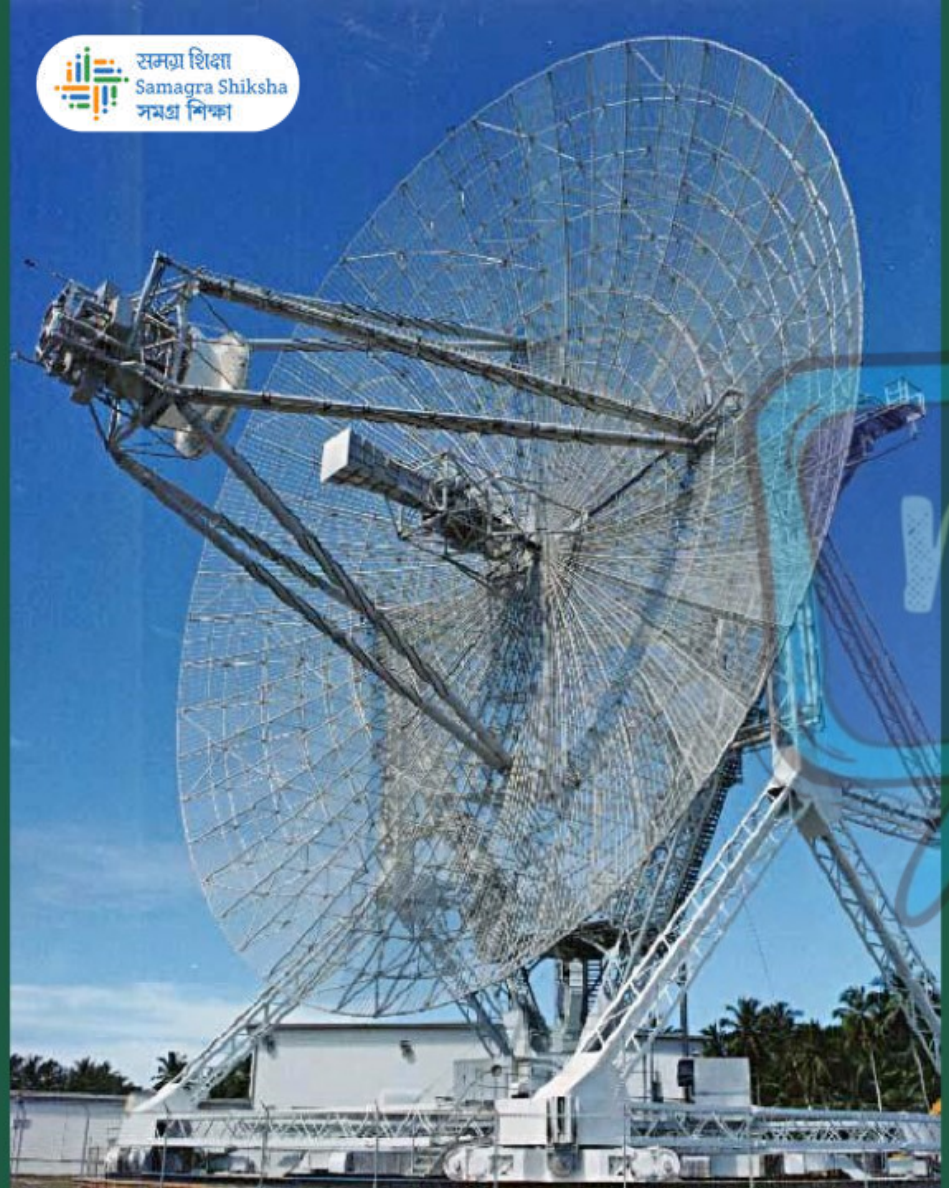

पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेज कर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं।

दायरा : सीमा

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



भारत में ही रोज साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि -"हजारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे (रनर्स) या फिर तेज घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया।

अहमियत : গুরুত্ব



तार ने रेलों से भी तेज गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलेस और आगे रेडार - दुनिया बदल रहा है।“

पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए।

तार : বার্তা প্রেৰণ কৰিবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা বৈদ্যুতিক তাঁৰ

বায়রলেস : বেতাৰ

ৰেডাৰ : বস্তুৰ দূৰত্ব, গতি আৰু অৱস্থান চিনাক্ত কৰাৰ ইলেক্ট্রনিক প্রণালী

पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से भी काफी प्रयास किए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया।

भारतीय डाक
India Post



यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार साधनों के तेज विकास तथा अन्य कारणों से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है, पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है।

फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ने चिट्ठियों की तेजी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

आवाजाही : अश-योड़ा देहाती : ग्रामीण

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca Foundation



जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाएँ तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतजार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं।

तह : গভীৰতা
बेसब्री : অধিক আগ্ৰহেৰে
उत्सुकता : আগ্ৰহেৰে
मिसाल : উদাহৰণ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतजार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज और भी साधन विकसित हो चुके हैं।

दौर: অৱধি, সময়

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca Foundation



आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और संजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्र रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं।

पुरखों : পুৰণি প্ৰজন্ম
संजोकर : সংগ্ৰহ কৰা
विरासत : সম্পত্তি
उद्यमी : উদ্যোক্তা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते, पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं।

पत्रों को तो आप सहेजकर रख लेते हैं पर एसएमएस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते हैं ? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं।

भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी-मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने-समझने का असली पैमाना है।

हस्तियों : प्रख्यात व्यक्ति
यादगार : स्मरणीय
धरोहर : सम्पद

भारत में आजादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे, वे आगे चलकर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए।

इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी जमीनी मजबूती लिए हुए था।

साबित : प्रमाणित

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी-इंडिया लिखे आते थे और वे जहाँ भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे।

आजादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ भी ऐसा ही था। गांधी जी के पास देश-दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था।

दिग्गज : प्रतिभावान व्यक्ति

कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे।

जब लिखते-लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाएँ हाथ से लिखने में जुट जाते थे।

महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव-गाँव में मिल जाते हैं।

पत्र भेजने वाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है।

यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आधार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

प्रशस्तिपत्र : प्रमाण पत्र

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज से कम नहीं हैं। पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम और निराला के पत्र हमको लिख्यौ है कहा तथा पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे बहुत मुस्तैद रहते थे।

मुस्तैद : प्रस्तुत

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा-जोखा मिलता है।

लेखा-जोखा : हिचाव - निकाच

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पत्र व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आजादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है।

मुडविल : सू-नाम

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पट्टियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फवारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अधिक बेसब्री से इंतजार होता है।

आलीशान : অতি সুন্দৰ
বর্ফবারী : হিমবৃষ্টি
ঝোপড়পট্টিয়োঁ : অস্থায়ী বা দৰিদ্ৰ মানুহৰ সৰু, সাধাৰণ ঘৰবোৰৰ গোট
ঢাণিয়োঁ : কেঁচা ঘৰৰ বস্তি যি গাৱঁৰ পৰা কিছু দূৰত সজা হয়

एक दो नहीं, करोड़ों लोग खतों और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाजों तक पहुँचते हैं और इसकी बहु आयामी भूमिका नजर आ रही है।

दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

बहु आयामी : महत्वपूर्ण

मूल्यांकन



1 | प्राचीन काल में संदेशों का आदान – प्रदान कैसे किया गया था ?

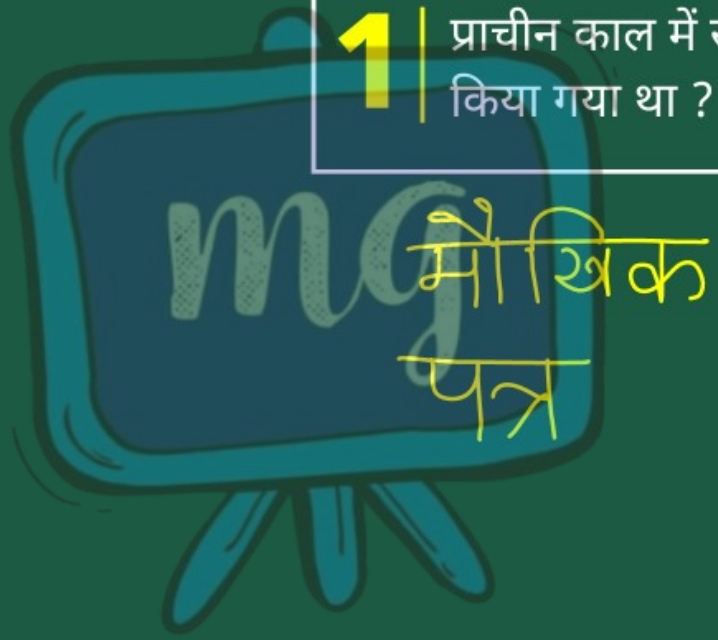

मूल्यांकन



2 | पुराने जमाने के संदेश वाहक क्या-क्या थे ?

कबूतर, हरकारा,
नर्स, तेज घोड़ा